International Research Journal of Human Resources & Social Sciences
Volume -1 Issue-1 (June 2014) ISSN (O): 2349-4085

# हिंदुस्तानी संगीत में हवेली संगीत की उपयोगिता

**डॉ श्रुति गोस्वामी**
**विषय- संगीत (गायन)**
**राजकीय महारानी सुदर्शन कन्या महाविद्यालय, बीकानेर**

## भूमिका

भारतीय संगीत आज दो प्रमुख धाराओं में विभाजित है- पहली कर्णाटक संगीत धारा और दूसरी हिंदुस्तानी संगीत धारा। संगीत की इन धाराओं अथवा शैलियों में पिछली अनेक शताब्दियों में अनेक उल्लेखनीय परिवर्तन - परिवर्धन हुए हैं। हिंदुस्तानी संगीत में हुए परिवर्तनों में पुष्टिमार्गीय राग सेवा अथवा हवेली संगीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

16वीं शताब्दी में महाप्रभु वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत सिद्धान्त की प्रतिष्ठा की थी और भगवत् अनुग्रह से प्राप्त होने वाली भक्ति की स्थापना की थी जिसे 'पुष्टिमार्ग' कहा जाता है प्रभुसेवा के लिए इस सम्प्रदाय में "भोग" और "श्रृंगार" के साथ-साथ "राग" भी एक अनिवार्य अंग है। सम्प्रदाय के मन्दिरों अथवा हवेलियों में किये जाने वाले पद गायन की शैली को 'कीर्तन' और 'हवेली' संगीत के नाम से जाना जाता है। महाप्रभु जी के द्वारा स्थापित और उनके पुत्र गुसाईं जी के द्वारा व्यवस्थित इस राग-सेवा के प्रारंभिक काल में आठ महान भक्त कवियों एवं श्रेष्ठ संगीतज्ञों को प्रभु सेवा के लिए नियुक्त किया गया था।

जिन्हें 'अष्टछाप' की संज्ञा दी गयी थी। ऐसा माना जाता है कि उनके द्वारा पोषित यह कीर्तन परंपरा आज भी पुष्टिमार्ग के मन्दिरों में अविच्छिन्न रूप से चल रही है।
इस शोध पत्र की विवेच्य सामग्री के लिए जिन विषय बिंदुओं का अध्ययन किया गया है वे निम्नलिखित हैं -

1. हवेली संगीत का सामान्य परिचय
2. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचलित राग स्वरुप से समानता, भिन्नता और विशिष्टता
3. काव्यपक्ष की प्रधानता और संगीतपक्ष की गौणता
4. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी हवेली संगीत की तरह काव्यपक्ष को महत्व दिए जाने की आवश्यकता
5. ऐतेहासिक कड़ियाँ जोड़े जाने की आवश्यकता
6. पदों के गायन हेतु उल्लिखित अथवा प्रयुक्त रागांग-राग का स्पष्टीकरण एवं अन्वेषण

प्रस्तुत शोध पत्र में संबन्धित विषय सामग्री और संपर्क सूत्रों का उपयोग किया गया है।
जिसके अंतर्गत महाप्रभुजी की चतुः श्लोकी,श्रीमद्भागवत,महाप्रभुजी की नवधा भक्ति,डॉ. सत्यभान शर्मा की पुस्तक "पुष्टिमार्गीय मंदिरों की संगीत-परंपरा " ,रेनू सचदेव की "धार्मिक परम्परायें एवं हवेली संगीत" की सामग्री का भी निर्देश किया गया है। इसके अलावा चंद्र कुमार शर्मा,गोस्वामी श्री वल्लभाचार्य (काम वन के पुष्टि पीठाधीश), पंडित दिनेश गोस्वामी,श्री नारायण रंगा से संपर्क किया गया।

प्रो.सत्यभान शर्मा के अनुसार प्रबंध प्रणाली का जन्म तब हुआ था जबकि भारतीय संगीत की इतिहास में प्रबंध गायन व ध्रुपद गायन का संक्रांतिकाल चल रहा था। ग्वालियर के राजा मानसिंह जिनको ध्रुपद गायन का प्रमुख प्रचारक व किन्ही के अनुसार आविष्कारक माना जाता है इसी काल में विद्यमान थे।उन्होंने संस्कृत के प्रबंधों को ब्रज भाषा के ध्रुपदों में रूपांतरित करके जन साधारण के समक्ष रखा था। श्री वल्लभाचार्यजी व उनके पुत्र गौ.विट्ठलनाथ जी ने श्री मद्भागवत में से श्री कृष्ण लीला सम्बन्धी संस्कृत के श्लोकों को लिया तथा उनको ब्रज भाषा में रूपांतरित करवा करके गायन की सामग्री बनाया।

कुछ रचनायें इस अर्थ में मनोरंजक हैं कि उनको संस्कृत के प्रबंध तथा ब्रज भाषा के ध्रुपद के बीच की वस्तु कहा जाता है। इस सम्प्रदाय की यह विशेषता रही है कि श्रेष्ठ वस्तु जहाँ से भी प्राप्त हो सकती थी उसका आदान प्रदान हुआ।

दैनिक क्रम में मंगला झांकी के खुलने से पूर्व ही अनिबद्ध गान के रूप में पदों को गाया जाता है, इसे हम आलापचारी का ही रूप कह सकते हैं। निबद्ध गान के अंतर्गत ध्रुपद व धमारों की विभिन्न बंदिशें आती हैं जिनके बारे में कुछ जानने से पूर्व हम कुछ ऐसी बंदिशें ले सकते हैं जिनमे काव्य रचना सम्बन्धी विशेष कौशल प्राप्त होता है जेसे राग माला, राशि माला, वर माला आदि। इनमें राग मालाएं संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। संगीत से सम्बन्धी साहित्य इस परम्परा के पदों में विपुल मात्रा में मिलता है। निष्कर्ष रूप में प्रो.सत्यभान शर्मा का कथन है कि पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंदिरों कि संगीत कि यह परम्परा भारतीय दार्शनिक विचारधारा "पुष्टिमार्ग" अथवा "वल्लभ-संप्रदाय" से सम्बद्ध है। न केवल साधारण रूप से सम्बद्ध है अपितु धार्मिक कृत्य का एक आवश्यक अंग है अतः हम इसमें भारतीय दर्शन कि स्पष्ट झांकी पाते हैं। संगीत कि यह परम्परा लगभग ५ शताब्दियाँ पार कर चुकी है और कालपरक असावधनियों कि संभावना पर किसी भी प्रकार का संदेह स्वाभाविक प्रतीत होता है तथापि इस सम्प्रदाय का संगीत सम्बन्धी धार्मिक आग्रह (रागों व बंदिशों के पारम्परिक स्वरूप से कोई छेड़-छाड़ न हो) हमको सर्व प्रकारेण आश्वस्त करता है कि पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंदिरों कि यह संगीत परम्परा "हवेली संगीत" भारतीय संगीत जगत में प्राप्त प्राचीनतम, पुष्ट व प्रशंसनीय परम्परा है। इस परम्परा ने भारतीय संगीत को अतुलनीय योगदान दिया है।

## हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचलित राग-स्वरूप से समानता, भिन्नता, और विशिष्टता :

सम्प्रदाय के प्रकाशित साहित्य और इसकी विभिन्न पीठों अथवा 'घरों में प्रयुक्त राग-सेवा की सामान्य जानकारी से पता चलता है कि जहाँ उनमें हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचलित राग-रागिनियों की तुलना में अनेक समानताएँ हैं वहीं उनमें से कुछेक में नामों की एवं कुछ में स्वरों की भिन्नताएं भी है और कतिपय विशिष्टताएँ भी हैं जिनके कारणों का उदघाटन किया जाना अपेक्षित है।

यहाँ प्रमुखतः हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में किये जा रहे और किये जाने योग्य, पुष्टिमार्गीय राग-सेवा अथवा हवेली संगीत की विषय सामग्री का उपयोग का और संभावनाओं का अन्वेषण करेंगे।

## काव्यपक्ष की प्रधानता और संगीतपक्ष की गौणता :

पुष्टि सम्प्रदाय में राग, सेवा का एक अंग है और पदों में अधिकांशतः प्रभु की लीलाओं का वर्णन और प्रभु का गुणानुवाद किया गया है जो इसमें प्रमुख है जबकि संगीत पक्ष गौण है। उदाहरण के लिए कीर्तन में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तरह बोलों की पुनरावृत्ति, आलापचारी और तानों-गमको इत्यादि जैसे अलंकारों का प्रयोग नहीं किया जाता।

## हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी हवेली संगीत की तरह काव्यपक्ष को महत्व दिये जाने की आवश्यकता :

कीर्तन में यदि किसी एक राग में अनेक पद समान छन्द और राग में निबद्ध हैं तो उनकी सांगीतिक संरचना प्राय: समान सी है। इससे गायन अथवा प्रस्तुतीकरण में सरलता और सहजता रहती है।उदहारण के लिए: "आज को सिंगार सुभग" और "आज और काल और" ये दोनों पद अल्हैया बिलावल राग में,ताल चौताल में गाये जाते हैं, इन दोनों की स्वर रचना लगभग समान है, जैसे

### श्रृंगार का पद

आज कौ श्रृंगार सुभग सांवरे गोपालजू कौ, कहत न बन आवे देखें ही बन आवे।
भूषणवसन भाँत-भाँत, अंग-अंग छबि कही न जात, लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावै।
मकरकुण्डल तिलकभाल कस्तूरी अति रसाल , चितवन लोचन विशाल कोटिकाम लजावै।
कंठसरीबनमाल फेंटा कटि छोरन छबि , निरखत त्रिभुवनत्रिया, धीर न मन लावै।
मेरे संग चलनिहार ठाढेहरि कुञ्जद्वार, हित की चित्त बात कहूँ जो तेरे जिय भावै।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर नख- सिख सुन्दर सुजान, बड़ भागिन ताहि गिनों सुजान ही लपटावें ॥

**स्थायी**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सां - | सां ध | नि प | ध नि | ध प | म ग |
| आ S | ज को | S सिं | गा S | र सु | भ ग |
| ग म | रे ग | मग प | म गम | रे सानि | रे सा |
| साँ S | व रे | SS गो | पा SS | ल जू S | S कौ |
| सा सा | - ग | म रे | ग प | - निध | नि सां |
| क ह | S त | S न | ब नि | S आ | S वै |
| सां - | गं रे | सां सां | सां सांनि | धप प | धनि सां |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दे ऽ | खे हि | ब नि | आ ऽऽ | ऽऽ वै | ऽऽ वै |
| x | 0 | 2 | 0 | 3 | 4 |
| **अन्तरा** | | | | | |
| प प | प सां | सां सां | सां - | नि रें | - सां |
| भू ष | ण ब | स न | भाँ ऽ | ति भाँ | ऽ ति |
| ध ध | नि नि | सां सां | सां सां | सां ध | नि प |
| अँ ग | अँ ग | छ वि | क हि | न जा | ऽ त |
| ग म | रे ग | प निध | सां - | नि रें | - सां |
| ल ट | प टी | ऽ सु | दे ऽ | स पा | ऽ ग |
| सां - | गंरे गं | रेंसां सां | सां - | धप प | निध नि |
| चि ऽ | त्तऽ को | ऽऽ चु | रा ऽ | ऽऽ वै | ऽऽ री |
| अन्य पदांश भी लगभग इसी प्रकार हैं | | | | | |

और

आज और काल्ह और दिनप्रति और और देखिये रसिक श्रीगिरिराजधरन॥

छिनप्रतिनईछबिबरनें सो कौन कवि नित्यहीं श्रृंगारबागो बरन-बरन ॥1॥

शोभासिंधु अंग-अंग मोहत कोटि अनंग छबि की उठत तरंग विश्वको मनहरन॥

चतुर्भुज प्रभु गिरिधर को स्वरुप सुधापान कीजे जीजे रहिये सदां ही शरन ॥2॥ 3॥

संप्रदाय के विभिन्न घरों अथवा पीठों में जो थोड़ी बहुत भिन्नता राग और ताल की दृष्टि से दिखाई देती है वह उनकी (पीठों की) दूरी,कीर्तनकारों की शिक्षा और कहीं-कहीं संप्रदाय में परंपरा से भिन्न अपरिचित और इतर व्यक्तियों के प्रवेश के कारण है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में संगीत पक्ष प्रमुख है और काव्य पक्ष गौण। इसमें अनेक स्थानों पर तो बन्दिशों की पद-रचना या तो अस्पष्ट है अथवा अधूरी। ऐसी स्थिति में जहाँ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में संगीत और साहित्य के सामंजस्य की आवश्यकता है वहीं हवेली संगीत में प्रयुक्त पदो का अपेक्षित मात्रा में समावेश अथवा ग्रहण किये जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा,जैसा की बताया जा चुका है,"अष्टछाप" में समाविष्ट अधिकांश कीर्तनकार श्रेष्ठ वाग्गेयकार थे और भक्ति के लिए अपेक्षित सेवा के प्रति सहजरूपेण समर्पित थे इसलिए उन्होंने अपने द्वारा रचे गए पदों

की स्वर रचना की होगी अथवा कीर्तन भी उन पदों के छंदों की मात्राओं के अनुसार ही किया होगा, किन्तु देखा गया है कि संप्रदाय के अनेकानेक पद उनके छन्दः प्रमाण में अनावश्यक परिवर्तन करते हुए गाये जाते है। ऐसा क्यों और कब हुआ होगा यह एक विचारणीय विषय है।

## ऐतिहासिक कड़ियाँ जोड़े जाने की आवश्यकता :

पुष्टिमार्ग में कीर्तन प्रभुसेवा का एक अंग है और सार्वजनिक प्रदर्शन अथवा मनोरंजन की विषयवस्तु नहीं है। घरों एवं सम्प्रदाय के मन्दिरों तक सीमित रहने के कारण राग-सेवा की यह परंपरा विगत लगभग पाँच शताब्दियों से भी अधिक समय से अविछिन्न और विशुद्ध रही है, जबकि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इस कालावधि के दौरान अनेक परिवर्तन आये और अनेक गायन शैलियों का जन्म और विकास हुआ है। ऐसी स्थिति में दोनो गायनशैलियों अथवा विधाओं में एक ही नाम से प्रचलित राग-रागणियों के स्वरूप और इतिहास की समीक्षा किया जाना भी अपेक्षित है, जैसे कानड़ा, धनाश्री आदि आदि।

## पदों के गायन हेतु उल्लिखित अथवा प्रयुक्त रागांग-राग का स्पष्टीकरण एवं अन्वेषण :

हवेली संगीत में गाये जा रहे और संप्रदाय के साहित्य में अनेक ऐसे नामों वाले रागों का उल्लेख है जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में आज राग के रूप में नहीं अपितु रागांग के रूप में जाने जाते हैं जिनसे अनेक रागों अथवा रागभेदों का जन्म होता है, जैसे मल्लार (मल्हार), सारंग, कानडा, बिलावल इत्यादि उनमें मल्लार अथवा सारंग आदि के कौनसे प्रकार का निर्देश है यह स्पष्ट नहीं किया गया है, उदाहरणार्थ कई स्थानों पर गौड मल्हार, धूलिया मल्हार, मिंया मल्हार के गायन में केवल मल्हार नाम का उल्लेख किया गया है, वृन्दावनी सारंग, नूर सारंग मात्र सारंग के रूप में, बागेश्वरी के रूप में कान्हड़ा एवं भीम पलासी के रूप में धनाश्री राग का नामोल्लेख किया गया है। अतः दोनों पद्धतियों में विद्यमान ऐसी स्थितियों का स्पष्टीकरण और समाधान भी किया जाना चाहिए। अतः संप्रदाय के विभिन्न घरों और श्रेष्ठ परंपरागत कीर्तनकारों से सम्पर्क कर उनकी स्वरूप की वास्तविक स्थिति का अन्वेषण किये जाने की आवश्यकता है जिससे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रचलित उनके समकक्ष स्वरुप और प्रकार के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।

## उद्देश्य एवं निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध में उपर्युक्त सभी विषय बिन्दुओं का अध्ययन विश्लेषण किया जाना प्रस्तावित है जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में हवेली संगीत की उपयोगिता का पता चलने के साथ-साथ हमारे संगीत के इतिहास की अनेक लुप्त कड़ियाँ जोड़े जाने में सहायता भी मिलेगी और यदि इसको शिक्षा के क्षेत्र में एक विषय के रूप में शामिल किया जाये तो इससे न केवल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को लाभ मिलेगा अपितु संप्रदाय के जिज्ञासुओं और समाज को भी इसकी जानकारी मिल जायेगी। शोध के द्वारा अभिप्रेत प्रयोजन हवेली संगीत और ऐसी ही अन्य विधाओं की विशेषताओं का हिंदुस्तानी संगीत में उपयोग किया जाना और उन्हें समाज के समक्ष लाना है जिससे हिंदुस्तानी संगीत के क्षेत्र का विस्तार हो और उनमें परस्पर रही समानता, भिन्नता और विशिष्टताएँ उजागर हों साथ ही हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में, हवेली संगीत में विद्यमान काव्यपक्ष की प्रधानता का उपयोग करना तथा पुष्टिसम्प्रदाय के विभिन्न घरों अथवा पीठों में विद्यमान राग और ताल सम्बन्धी भिन्नता के कारणों को समाज के समक्ष लाना भी इसका उद्देश्य है।

जैसा की शोध के प्रारम्भ में कहा गया है इसमें निम्नांकित विषयों का विश्लेषण किया गया है :-

हिंदुस्तानी संगीत में प्रचलित राग स्वरुप से समानता ,भिन्नता और विशिष्टता काव्यपक्ष की प्रधानता और संगीत पक्ष की गौणता , हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी हवेली संगीत की तरह काव्य पक्ष को महत्व दिए जाने की आवश्यकता, ऐतिहासिक कड़ियाँ जोड़े जाने की हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में और पदों के गायन हेतु उल्लेखित अथवा प्रयुक्त रागांग राग का स्पष्टीकरण एवं अन्वेषण।

इस शोध के द्वारा पुष्टिमार्गीय राग सेवा अर्थात हवेली संगीत के अनेक ऐसे पक्षों का भी उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग हिंदुस्तानी संगीत में किया जाना चाहिए साथ ही ऐसे सुझावों का निर्देश भी किया गया है जो इन संगीत पद्धतियों में अपनाये जाने अपेक्षित हैं ।

## सन्दर्भ सूची :

1. महाप्रभुजी -चतुः श्लोकि - श्री वल्लभाचार्य ट्रस्ट, मांडवी
2. श्रीमद्भागवत गीताप्रेस, गोरखपुर
3. प्रो.सत्यभान शर्मा -पुष्टिमार्गीय मंदिरों की संगीत-परंपरा,राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली
4. रेनू सचदेव-धार्मिक परम्परायें एवं हवेली संगीत,राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली
5. पंडित दिनेश गोस्वामी द्वारा लिखित लेख-पुष्टिमार्गीय राग सेवा बनाम हवेली संगीत,कला प्रयोजन
6. डॉ. श्रुति गोस्वामी पुष्टिमार्गीय राग सेवा के अग्रणी कीर्तनकार पंडित ढुंढ महाराज-व्यक्तित्व और कृतित्व